वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा B.A. Part-I

नये सत्र से प्रभावी

सामान्य हिन्दी (रचना-अनिवार्य)

कला/विज्ञान/वाणिज्य (सामान्य एवं प्रतिष्ठा दोनों वर्गों के लिए)

[पूर्णांक : 100

समय : तीन घंटे]

अंक विभाजन :

(क) पाठ्यपुस्तक से आलोचनात्मक प्रश्न : 15 × 3 = 45 अंक

(ख) पाठ्यपुस्तक से व्याख्यात्मक प्रश्न : 10 × 2 = 20 अंक

(ग) व्यावहारिक व्याकरण : = 20 अंक

अध्येतव्य अंश—मुहावरे, शब्द-वाक्य-शुद्धि, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, अनेकार्थक शब्द, श्रुति सम भिन्नार्थक शब्द, लिंग-निर्णय।

(घ) **पत्र लेखन**—(आवेदन, कार्यालयीय पत्र अथवा समसामयिक समस्याओं के निवारणार्थ संबन्धित पदाधिकारियों के नाम, राज्य के किसी भी दैनिक पत्र में सम्पादक के माध्यम से प्रेषित पत्र।) = 15 अंक

कुल = 100 अंक

निर्धारित ग्रंथ :

1. **काव्यतारा** — सम्पादक डॉ॰ बद्रीनाथ तिवारी एवं डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

निर्धारित पाठ :

विद्यापति : (i) भलहर-भलहरि भलतुअ, कला ..... ओ नारायण ओ सूलपाणि

(ii) जय जय भैरवि असुर भयाउनि .... पुत्र बिसरि जनु माता,

(iii) नंदक नंदन कदंबक तरुतर ..... बन्दह नंद किशोरा,

(iv) देख देख राधा रूप अपार ..... अहो निसि कोर अगोरी।

कबीरदास — साखी -- 1-20 तक।

सूरदास — बाल लीला के पद-जसोदा हरि पालने झुलावें, सोभित कर नवनीत लिए सिखवत चलन जसोदा मैया, प्रातः समय दधि पमयति जसोदा ..... सूर बलि-जाइ, कजरी को पय पिअहुँ लाल ..... सो सुखर उन न कढै, मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी, मैया मैं नहि माखन खायो, खेलन अब मेरी जाय बलैया, गये स्याम ग्वालिनि घर सुने।

तुलसीदास — रामचरितमानस-रामायतन-अयोध्याकाण्ड-दोहा सं.- 125 से 131 तक।

बिहारी — सतसई-सार 1-20 दोहे तक।

माखन लाल चतुर्वेदी—कविता-नाश का त्यौहार, गंगा मांग रही है मस्तक, पुष्प की अभिलाषा।

जय शंकर 'प्रसाद'—बीती विभावरी जाग री, ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे-धीरे।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'—सरस्वती-वन्दना, भिक्षुक, संध्या सुन्दरी।

सुमित्रानन्दन पंत — प्रथम रश्मि, नौका बिहार।

महादेवी वर्मा — कौन पहुँचा देगा उस पार, पंथ होने दो अपरिचित, प्राण रहने दो अकेला, पुष्प-था कली के रूप शैशव में अहो सूखे सुमन।

Scanned with CamScanner

रामधारी सिंह 'दिनकर'—किसको नमन करूँ।
अज्ञेय — साँप, सागर के किनारे।
नागार्जुन — कालिदास, हिम कुसुमों का चंचरीक।
मुक्तिबोध — दुरतारा।
भवानी प्रसाद मिश्र— मंगल वर्षा।
धूमिल — गाँव।

2. गद्य संचय — सम्पादक—डॉ॰ राम विनोद सिंह
सम्पूर्ण-संकलित अंश।

3. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना—
डॉ॰ वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना।

■

स्नातक खण्ड - 1

हिन्दी-रचना अनिवार्य (अहिन्दी भाषियों के लिए)

कला/विज्ञान/वाणिज्य

(सामान्य एवं प्रतिष्ठा दोनों वर्गों के लिए)

समय : $1\frac{1}{2}$ घंटे] [**पूर्णांक :** 50

अंक विभाजन :

(क) वर्णनात्मक प्रश्न-काव्य से	:	10 अंक
(ख) वर्णनात्मक प्रश्न-गद्य से	:	10 अंक
(ग) व्याकरण	:	10 अंक
(घ) दिये गये शब्दों से अर्थपूर्ण वाक्य लेखन	:	05 अंक
(ङ) प्रकृति, पर्व, सामाजिक स्थिति, विज्ञान एवं राष्ट्र विषयक निबंध-लेखन।	:	15 अंक
		कुल = 50 अंक

निर्धारित ग्रन्थ :

1. **निबन्ध श्री** : सम्पादक-डॉ॰ परशुराम सिंह, श्री कृष्ण प्रकाशन, कतीरा, आरा। पाठसंख्या-प्रारम्भ से 10 पाठ तक।
2. **काव्य वाटिका** : सम्पादक-प्रोफेसर डॉ॰ रमेशचन्द्र मिश्र 'शिव', जय-भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
   निर्धारित पाठ : कबीरदास साखी-1 से 10 तक।
   साखी : 'प्रेम न बाड़ी उपजै', 'पोथी पढ़ि-पढ़ि', 'लाली मेरे लाल', 'जब मैं था', 'कहत सुनत', 'छिनही चढ़ै', 'पिया चाहै', 'गुरु धोबी', 'गुरु गोविन्द, 'तेरा साई', 'पद-रहनानहिं देस बिराना है'।
3. **व्याकरण** :
   रचनामानस पठित अंश : प्रोफेसर रामेश्वरनाथ तिवारी। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण, शब्द और शब्दार्थ, लिंग-निर्णय, मुहावरे, विपरीतार्थक शब्द।
4. **हिन्दी निबंध ग्रंथ** : निबंध भास्कर-डॉ॰ वचन देव कुमार, भारतीय भवन, पटना।

■

Scanned with CamScanner

स्नातक खण्ड - 1

प्रधान हिन्दी

(कला के वैकल्पिक विषय के रूप में सहायक एवं सामान्य छात्रों के लिए)

समय : तीन घंटे] [पूर्णांक : 100

अंक विभाजन :

(क) आलोचनात्मक प्रश्न पाठ्यपुस्तकों से तीन प्रश्न	:	15 × 3 = 45 अंक
(ख) कवि अथवा लेखक परिचय—दो प्रश्न	:	10 × 2 = 20 अंक
(ग) सप्रसंग व्याख्या— (काव्य एवं नाटक से) दो प्रश्न	:	10 × 2 = 20 अंक
(घ) छंद, अलंकार, रस, परिचय एवं उदाहरण	:	5 × 3 = 15 अंक
		कुल = 100 अंक

निर्धारित ग्रन्थ :

1. **काव्य-रसनिधि :** सम्पादक डॉ॰ बद्रीनाथ तिवारी, जय भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद।

निर्धारित पाठ :

विद्यापति : विरह—'सखि हे बालम जितब विदेसे', 'मधुबन मोहन गेलरे', 'लोचन धाए फेदाएल', 'के पतिआ लए जाएत रे', 'चानन भेल विषम सर रे।'

कबीरदास : प्रारम्भिक—20 दोहें।

1. 'चकई बिछुरी रैनिकी', 2. 'बासुरी सुख नाँ रैनि सुख', 3. 'बिरह भुवंगम तन बसै', 4. 'अँखियन तौ झाँई परी', 5. कै बिरहिन कौं मीच दै', 6. 'परवत-परवत मैं फिरा', 7. 'पानी ही ते हिम भया', 8. 'आया था संसार में', 9. 'जब मैं था तब हरि नहीं', 10. 'कागद केरी नाँरी', 11. 'मना मनोरथ छाड़ि दें।', 12. 'जहाँ न चींटी चढ़ि सकै', 13. 'माया मुई न मन मुवा', 14. 'मन मथुरा दिल द्वारिका', 15. 'जाके मुँह माया नहीं', 16. 'मरते-मरते जग मुवा', 17. 'यह तन जारौं मसि करौं', 18. 'गुरु गोविंद दोउ', 19. 'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा', 20. 'जल बीच कुम्भ, कुम्भ बीच जल है।'

सूरदास : पद-1. हमारे हरि हरित की लकरी, 2. साकी सीख सुनै ब्रज कोरे ?, 3. ब्रजजन सकल स्याम व्रतधारी, 4. कोट ब्रज बाँचत बाहिनं पाती, 5. बिन गोपाल बैरिन भई कुजै, 6. संदेसनि मधुवन कूप भरें, 7. उर में माखन चोर गड़ै, 8. ऊधो मत नहि हाँथ हमारे, 9. ऊधो मन माने की बात, 10. मधुकर! हम न होहि वे बेली।

तुलसीदास : रामचरितमानस से—नाम वंदना।

बिहारी : प्रारम्भिक—संकलित 20 दोहे—

1. मेरी भव बाधा हरौ, 2. सीस मुकुठ कटि काछनी, 3. मोर मुकुट की चंद्रिकनी, 4. सोहत ओढ़े पीत पटु, 5. रनित भृंग घंटावली, 6. तो पर वारौं उरबसी, 7. अलि इन लोचन को कछु, 8. इन दुखिया अँखियान, 9. कहत सबै दिए, 10. तौ लगि या मन सदन में, 11. वतरस लालच लाल की, 12. तजि तीरथ हरि राधिका, 13. किती न गोकुलकुलवधु, 14. अधर धरत हरि के परत, 15. कहत सवै वेदी दिये, 16. नासा मोरि नचाय दृग, 17. चिरंजीवी जोरी जुरै, 18. मकराकृति गोपाल के, 19. कागज पर लिखत न बनत, 20. करले चूमि चढ़ाय सिर।

Scanned with CamScanner

भारतेंदु हरिश्चन्द्र	:	यमुना-वर्णन।
माखन लाल चतुर्वेदी	:	जवानी
मैथिली शरण गुप्त	:	सखि, ने मुझसे कहकर जाते।
जयशंकर 'प्रसाद'	:	अरुण यह मधुमय देश हमारा।
निराला	:	विधवा, स्नेहनिर्झर।
पंत	:	मौन निमंत्रण, द्रूत झरो।
महादेवी वर्मा	:	दूर के संगीत सा वह कौन है! मैं नीर भरी दुःख की बदली, धीरे-धीरे उतर क्षितिज से आ वसंत रजनी।
जानकी बल्लभ शास्त्री	:	किसने बाँसुरी बजाई, मेघ गीत।
हरिवंश राय बच्चन	:	तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाये, स्वप्न में तुम हो तुम्ही हो जागरण में।
रामधारी सिंह 'दिनकर'	:	'कुरुक्षेत्र' से युधिष्ठिर का पश्चाताप।

2.	प्रतिनिधि कहानियाँ	:	सम्पादक—डॉ॰ राम प्यारे तिवारी एवं डॉ॰ नीरज सिंह।
	निर्धारित पाठ	:	कफन—प्रेमचन्द, पुरस्कार—जयशंकर 'प्रसाद', ध्रुवयात्रा—जैनेन्द्र, परदा—यशपाल, परमात्मा का कुत्ता—मोहन राकेश, वापसी—उषा प्रियवदा, तबै एकला, चलो रे- फणीश्वरनाथ रेणु।
3.	ध्रुवस्वामिनी	:	जयशंकर 'प्रसाद'
	(i) छन्द परिचय	:	दोहा, चौपाई, रोला, उल्लाला, मतगयंद, मालिनी, शिखरिणी, मांकान्ता, कवित्त, सवैया, छप्पय, कुण्डालियाँ।
	(ii) अलंकार परिचय	:	उपमा, रूपक, अपह्नुती, श्लेष, यमक, अर्थान्तरन्यास, निदर्शना, विशेषोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति, विभावना, प्रतीत, तुल्योगिता, दीपक।
	(iii) रस तथा उसके भेद	:	परिचय।

अभिस्तावित ग्रन्थ :

(i) अलंकार, मुक्तावली—प्रोफेसर देवेन्द्रनाथ शर्मा, भारतीय भवन, पटना।
(ii) छन्द प्रकाश—डॉ॰ यदुनंदन शास्त्री।
(iii) काव्य शास्त्र—डॉ॰ भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
(iv) काव्यशास्त्र आद्यचरण—डॉ॰ बद्रीनाथ तिवारी।
(v) काव्य के रूप—डॉ॰ गुलाब राय।

■

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

त्रि-वर्षीय हिन्दी प्रतिष्ठा में प्रथम-वर्ष में प्रथम एवं द्वितीय, द्वितीय वर्ष में तृतीय तथा चतुर्थ एवं तृतीय वर्ष से पंचम से लेकर अष्टम पत्र अर्थात् कुल मिलाकर हिन्दी प्रतिष्ठा स्नातक का परीक्षाफल संयुक्त रूप से मानक प्रतिशत के आधार पर हिन्दी-स्नातक प्रतिष्ठा में उत्तीर्णता का द्योतक होगा। साथ ही हिन्दी-रचना प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष तथा सहायक विषय के स्वरूप में प्रधान हिन्दी के पत्र प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय वर्ष के छात्रों के लिए अलग से अपना मापदण्ड रखते हैं, तृतीय वर्ष में हिन्दी रचना के स्थान पर सामान्य अध्ययन है।

Scanned with CamScanner

हिन्दी प्रतिष्ठा

प्रथम पत्र

[पूर्णांक : 100

समय : तीन घंटे]

निर्धारित पाठ्यांश :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास—आदिकाल तथा भक्तिकाल

(क) इतिहास ग्रंथ से दो प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य : 15 × 2 = 30 अंक

(ख) इतिहास के पठित अंश के किन्हीं दो कवियों अथवा कृतियों का परिचयात्मक अध्ययन : 10 × 2 = 20 अंक

2. भक्तिकाव्य-संग्रह-सम्पादक डॉ॰ नन्द किशोर तिवारी

प्रश्न-आधार

(i) आलोचनात्मक प्रश्न : 15 × 1 = 15 अंक

(ii) सप्रसंग व्याख्या : 10 × 2 = 20 अंक

(iii) वस्तुनिष्ठ प्रश्न अथवा टिप्पणी-लेखन (इतिहास के पठित अंश से) : 5 × 3 = 15 अंक

कुल = 50 अंक

अध्ययन हेतु निर्धारित पाठ :

विद्यापति, जायसी, कबीर, सूरदास, तुलसीदास, रहीम, मीरा, केशव-दास, नन्द-दास, रखखान।

द्वितीय पत्र

गद्य साहित्य

(उपन्यास, नाटक एवं कहानी)

[पूर्णांक : 100

समय : तीन घंटे]

निर्धारित पाठ्यांश :

1. अंक विभाजन

(क) आलोचनात्मक प्रश्न : 15 × 3 = 45 अंक

(ख) आलोचनात्मक प्रश्न : 10 × 3 = 30 अंक

(ग) साहित्य-विद्या-परिचय : 5 × 2 = 10 अंक

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न : 15 × 1 = 15 अंक

निर्धारित ग्रंथ :

(क) **चित्रालेखा**—भगवतीशरण वर्मा।

(ख) **अजातशत्रु**—जयशंकर 'प्रसाद'।

(ग) **कथ्यान्तर**—डॉ॰ राम विनोद सिंह।

निर्धारित पाठ :

उसने कहा था, कफन, आकाशदीप, जयदोल, रसप्रिय, अमृतसर आ गया।

अभिस्तावित ग्रंथ :

1. हिन्दी उपन्यास—डॉ॰ शिव नारायण श्रीवास्तव, सरस्वती मंदिर, वाराणसी।

Scanned with CamScanner

2. **हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास**—डॉ॰ दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली।
3. **कहानी :** नई कहानी डॉ॰ नामवर सिह, लोकभारती, इलाहाबाद।
4. **नाटककार जयशंकर 'प्रसाद' :** जयनाथ नलिन।
5. **अजातशत्रु : एक समीक्षा**—डॉ॰ बद्रीनाथ तिवारी, विनोद प्रकाशन, पटना।
6. **प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन**—डॉ॰ जगन्नाथ प्रसाद शर्मा।
7. **हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन**—गणेशन।
8. **कहानी आन्दोलन की भूमिका**—डॉ॰ बलराज पाण्डेय, अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद।

Scanned with CamScanner